International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 21-04-2020; Accepted: 09-05-2020; Published: 26-05-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 3; 2020; Page No. 12-13

भारतीय राजनीति एवं दीनदयाल उपाध्याय का दर्शन

ऋतु अग्रवाल
सहायक प्रोफेसर, एमिटी विश्वविद्यालय, लखनऊ कैम्पस, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
भारतीय राजनीतिक जीवन में सुचिता पूर्ण जीवन जीने वाले दीनदयाल जी के दर्शन ने भारतीय राष्ट्रवाद को सामान्य जन तक पहुँचाने का कार्य किया। एकात्ममानव दर्शन के प्रणेता दीनदयाल जी ने समष्टि एवं व्यष्टि को समान महत्व प्रदान किया। राष्ट्र के अन्तिम व्यक्ति तक शासन सत्ता पहुँचे इसी आकांक्षा को लेकर दीनदयाल जी ने जिस राजनीति यज्ञ का आरम्भ किया आज वह भारत राष्ट्र के एक नयी आशा और आकांक्षा से पूरित हो रही है।

मूल शब्दः एकात्म, मानव दर्शन, राष्ट्रवाद, राजनीति, मानवीय, मूल्य

प्रस्तावना
भारतीय चिन्तन परम्परा में श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा अनादि काल से ही रही है। मनुष्यता और श्रेष्ठ मानव मूल्यों की स्थापना और उसका निरन्तर परिष्कार हमारी संस्कृति का मूलाधार है। हमारी परम्परा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि हमारे समाज के भीतर से ही जड़ होती व्यवस्था को दूर कर उसे युगानरूप प्रस्तुत करने वाले जननायकों का आविर्भाव होता है। वैदिक युग से लेकर अब तक अनेकानेक ऐसे महापुरूषों का उन्नयन हमारा समाज देख चुका है।

हमारे देश में ऐसे महापुरूषों की एक विशाल परम्परा है, जिन्होंने समाज की दशा एवं दिशा को निर्देशित करते हुए अपने ऐतिहासिक दायित्व का निर्वाह किया। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक के भारतीय चिन्तन का विशेष योगदान रहा है। दसवीं सदी से लेकर उन्नसवीं सदी तक हमारा समाज अनेक झंझावातों से गुजरा और इन सभी विषम परिस्थितयों से गुजरते हुए की हमारी मूल सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक चिन्तन धारा तनिक भी प्रभावित नही हुई।

आधुनिक काल में भारतीय समाज में स्वाधीन चेतना के प्रसार के साथ–साथ अनेकानेक समाजसुधार आन्दोलन भी आरम्भ हुए। स्वाधीनता आन्दोलन के साथ–साथ भावी भारतीय समाज की रूपरेखा की नींव भी पड़ गयी। आधुनिकता के साथ–साथ विचारों एवं चिन्तन के आदान–प्रदान का भी आरम्भ हुआ। विचारों के आवागमन का प्रभाव हमारे समाज पर भी पड़ा। स्वाधीन भारत को पाश्चात्य विचारों ने गहरे स्तर पर प्रभावित किया, इसका प्रभाव भारतीय समाज एवं भारतीय शासन व्यवस्था पर भी व्यापक रूप से देखने को मिलता है। स्वाधीनता आन्दोलन के समय में भारतीय समाज की एकजुटता ने हमें एक पहचान दी और परिणाम स्वरूप हमारा देश स्वाधीन हुआ। स्वाधीनता के बाद हमें एक ऐसे शासन व्यवस्था और समाज व्यवस्था की आवश्यकता भी जो भारतीय संस्कृति के अनुकूल हो, किन्तु स्वाधीनता से हमारे समाज की जो उम्मीदें थीं वह पूरी न हो सकीं। स्वाधीनता के पश्चात पाश्चात्य परिवेश का प्रभाव भारतीय समाज, शिक्षा, संस्कृति और शासन सभी पर व्यापक रूप से पड़ा। 15 अगस्त 1947 को हमारी स्वाधीनता के बाद देश में प्रजातांत्रिक शासन व्यवस्था स्थापित हुई। 26 जनवरी 1950 को संविधान लागू हुआ और जनता द्वारा चुनी हुई सरकार अस्तित्व में आयी। इस समय भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस मुख्य राजनीतिक दल थी और उसी के हाथों में देश की बागडोर थी।

भारत में अपनी शासन व्यवस्था स्थापित होने के पश्चात् जनता की जो अपेक्षाएँ थी, उन अपेक्षाओं को पूरा न कर सकने के कारण मोहभंग की स्थितियाँ बनी। इस नये परिवेश में नये जननायकों का भारतीय राजनीतिक के फलक पर उदय हुआ। इन जननायकों में श्यामा प्रसाद मुखर्जी, जय प्रकाश नारायण, पं0 दीनदयाल उपाध्याय, लाल बहादुर शास्त्री आदि प्रमुख हैं। इन जननायकों ने भारतीय और आम जनता की भावनाओं को मुखर करने का कार्य किया। भारतीय एवं पाश्चात्य विचारों के द्वन्द के मध्य भारतीयता को पुनः स्थापित करने का कार्य इनके द्वारा किया गया।

भारतीय जनसंघ के नेताओं ने हमारी प्राचीन भारतीय परम्परा के उत्थान और पुनरूद्धार करने का कार्य आरम्भ किया। इनमें पं0 दीनदयाल उपाध्याय का योगदान विशिष्ट है। पं0 दीनदयाल जी ने भारतीय प्रजा का आह्वान किया। दीनदयाल जी का उदय ऐसे समय में हुआ जब हमारा समाज लोकमान्य तिलक, श्री अरविन्द एवं स्वामी विवेकानन्द की विचार परम्परा से नाता तोड़ रहा था। स्वतंत्रता संग्राम व भारतीय पुनर्जागरण की विभूतियाँ राजनीति में प्रतिबिम्बित नहीं हो रहीं थीं। दीनदयाल जी ने हमारे समाज में भारतीयता की अलख जगाने का कार्य किया। दीनदयाल उपाध्याय जी का जीवन एवं उनका दर्शन अनुकरणीय है।

पं0 दीनदयाल का जीवन एक सामान्य भारतीय का जीवन है। एक सामान्य एवं मेधावी व्यक्तित्व के धनी होने के साथ–साथ दीनदयाल जी सहज एवं बहुत ही मिलनसार व्यक्ति थे। आपने भारतीय समाज को उसकी प्राचीन विरासत से जोड़ने और भारतीय राजनीति एवं शासन व्यवस्था को नयी दिशा देने के लिए विशेष प्रयास किया। वर्तमान समय में भारतीय समाज में एक नये तरह का जागरण देखने को मिल रहा है, जिसके आरम्भ का श्रेय दीनदयाल उपाध्याय जी को ही है। आपने 'एकात्म मानववाद' का प्रणयन कर समाज एवं व्यक्ति के एकात्म की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया।

समाज और राष्ट्र की संरचना में व्यक्ति सर्वाधिक महत्वपूर्ण अवयव है। दीनदयाल जी अपने संगठन के द्वारा एक प्रगतिशील समाज की स्थापना के लिए प्रतिबद्ध थे। इस सन्दर्भ में उनके विचार है–

''हम लोग समाज को सुखी, वैभव – संपन्न और प्रगतिशील बनाने का उद्देश्य लेकर संगठन का कार्य कर रहे हैं। हम यह जानते हैं कि राष्ट्र–जीवन की सम्मानपूर्ण स्थिति शक्ति के बिना

नही आ सकती, और शक्ति बिना संगठन के नही आ सकती। अतः शक्ति प्राप्त करने का उद्देश्य ही हमारे इस संगठन का काम है।'' (एकात्म मानववादः दीनदयाल उपाध्याय, पृष्ठ – 15)

दीनदयाल जी समाज की संगठित अवस्था को ही समाज की स्वाभाविक अवस्था स्वीकार करते हैं। संगठन के माध्यम से समाज को उसकी स्वाभाविक अवस्था में पहुँचाना और उसको अपनी विराट परम्परा से जोड़कर नये परिवेश के अनुरूप ढालना ही आपका मूल अभिप्रेत रहा है। आपने भारत में प्रचलित पाश्चात्य वादों के सामने भारतीयता को प्रतिष्ठित करने के निमित्त कार्य किया। व्यक्तिवाद और समाजवाद से परे जाकर अपने व्यक्ति व समाज का आत्म–साक्षात्कार कराया। सभ्यता के विकास में व्यक्ति और समाज दोनों का समान महत्व है। दीनदयाल जी ने अपने चिन्तन के माध्यम से ऐसे विचारों का वातायन खड़ा किया जिसमें समाज एवं व्यक्ति एक दूसरे के पूरक बने।

समाज और व्यक्ति के सन्दर्भो में दीनदयाल जी ने जितना कुछ भारतीय समाज को दिया, उससे व्यापक उनका भारतीय राजनीति को नयी दिशा देने में योगदान है। उनके राजनैतिक जीवन दर्शन का पहला सूत्र उन्हीं के शब्दों में है– ''भारत में रहने वाला और इसके प्रति ममत्व कला, साहित्य, दर्शन सब भारतीय संस्कृति है। इसलिए भारतीय राष्ट्रवाद का आधार यह संस्कृति है। इस संस्कृति में निष्ठा रहे तभी भारत एकात्म रहेगा।''

हमारी भारतीय संस्कृति का ध्येय वाक्य है– ''वसुधैव कुटुम्बकम''। दीनदयाल जी इसी भारतीय संस्कृति के व्याख्याता हैं। अपनी भारतीय संस्कृति के प्रति अगाध निष्ठा आपके व्यक्तित्व का अभिन्न अंग है। यह निष्ठा आपको समकालीन राजनैतिकों से अलग और विशिष्ट बनाती है। भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के प्रति अपने आग्रह के कारण ही आप एकात्म मानव दर्शन एवं सास्कृतिक राष्ट्रवाद जैसे महत्वपूर्ण विचारों का आपने प्रणयन किया। भारतीय आचार–विचार और उदाक्तता के संबंध में आपका चिन्तन महत्वपूर्ण है। हमारी संस्कृति व्यक्ति और समाजनिष्ठ होने के साथ–साथ ब्रह्मनिष्ठ भी है। इस सन्दर्भ में लिखा है। एक अर्थशास्त्री मुझसे मिले, कहने लगे– '' हिन्दुस्तान में लोग चीटीं और बन्दरों को जितना खिलाते हैं, वह बंद कर दे तो भूख से मरने वालों की संख्या आधी रह जायेगी।'' इसके प्रत्युत्तर में दीनदयाल जी ने कहा– ''यदि आप सब एक माह में चार दिन उपवास करें तो कितनों को भोजन मिल जाए? बीमार होने पर दवा न ले तों कितनी बचत हो जाए?'' (एकात्मक मानववाद, पृष्ठ –23)

भारतीय संस्कृति की उदाक्तता का बृहदत्तर रूप उपरोक्त पंक्तियों में देखने को मिलता है। हमारी सांस्कृतिक परम्परा में जितना महत्व व्यक्ति का है, उतना ही महत्व हमारे पारिस्थितिक तंत्र के सभी जीवों और वनस्पतियों का भी है। दीनदयाल जी भारतीय ब्रह्मनिष्ठ संस्कृति की व्याख्या आधुनिक सन्दर्भों में की। आध्यात्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन दृष्टि का समन्वय स्थापित कर आपने भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को भारतीय जीवन पद्धति का अनिवार्य अंग बनाने पर आपने जोर दिया। आपके विचारों का वातायन आज भारतीय समाज में व्यापक स्तर पर देखने को मिल रहा है। आपने जिस राजनीतिक आदर्श को लेकर भारतीय समाज को संगठित किया, उस संगठन की व्यापकता आज राष्ट्रवाद के विचारों को पोषित एवं सवंर्द्धित कर रही है।

दीनदयाल जी का उदय भारतीय राजनीति के उस समय में हुआ, जब भारतीय समाज और राजनीति पर पाश्चात्य विचारों और विचारधाराओं का घटाटोप छाया हुआ था। एक ओर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस थी, तो दूसरी ओर साम्यवादी दल थे। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस भारतीय और राष्ट्रीयता से सरोकार स्थापित नही कर सकी थी, तो दूसरी साम्यवाद का आधार ही भारत नही था। ऐसे समय में डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भारतीय जनसंघ की स्थापना की और दीनदयाल जी ने उस विचार धारा को व्यापक रूप में भारतीय जनमानस में स्थापित करने की दिशा में अपना योगदान दिया।

भारतीय समाज में आज जिस राष्ट्रीय चेतना का प्रसार आज देखने को मिल रहा हैं, उसका बीज वचन दीनदयाल जी के एकात्म मानववाद और भारतीय चिन्तन के उत्थान में हो गया था। दीनदयाल जी ने अपने विचारों से भारतीय राजनीति को एक नये मार्ग पर प्रशस्त करने का कार्य किया।

सन्दर्भ सूची

1. एकात्म मानववाद : दीनदयाल उपाध्याय
2. भारत की राष्ट्रीय संस्कृति : एस0 आविद हुसैन,
3. मनव मूल्य और साहित्य